

जिज्यारते कुबूर

मअ आदाब व अहकाम

मजरत अल्लामा मोलाना शाह मुहम्मद अब्दुल अजीज खा

www.jannatikaun.com

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُورِ فَزُورُوهَا وَفَائِئُهَا تُرْهِدُ فِي الدُّنْيَا

وَتُذَكِّرُ الْآخِرَةَ.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अलहाब से फरमाया
मैंने तुमको कब्रों की जियारत से मना किया था अब तुम को
इजाजत देता हूँ तुम कब्रों की जियारत करो क्योंकि वह दुनिया
से बे रग़बत करती और आखिरत को याद दिलाती है।

जियारते कुबूर

मअ

JANNATI KAUN?

आदाब व अहकाम

अज इफ़ाज़ात

कुदवतुल उलमा जुब्दतुल फ़ुज़ला हज़रत अल्लामा
मौलाना मुफ़्ती शाह मुहम्मद अब्दुल अजीज़ खां
फ़तहपुरी मद्जिल्लहुल आली

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला
सय्यिदिल मुर्सलीन व अला आलिही व अस्हाबेही अजमईन!

1. हदीस:- हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मैं ने तुम को कब्रों की जियारत से मना किया था। अब तुम कब्रों की जियारत किया करो। क्यों कि जियारते क्रुबूर दुनिया से बेरगुबत करने वाली और आखिरत को याद दिलाने वाली है। (इब्ने माजा)

2. हदीस:- हुजुरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो अपने माँ-बाप के कब्र की, दोनों या एक की, हर जुमा में जियारत करेगा उस को बख़्श दिया जाएगा और उसको नेकोकार लिखा जाएगा। (बैहकी)

3. हदीस:- उम्मुल मोमेनीनी हजरत आइशा सिद्दिका रजियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि जब हुजूर पुरनूर के मेरे यहाँ रहने की रात होती तो हुजूर आखिर शब में बकीअ को तशरीफ ले जाते और फरमाते -

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّوءَمِّينَ وَأَتَاكُمْ مَاتُوا عَدُونََ غَدًا مَّوْتُوجِلُونَ وَإِنَّا إِنشَاءُ

اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ ط اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِأَهْلِ بَقِيعِ الْغَرَقَدِ (مُسْلِم)

अस्सलामु अलैकुम दा-र कौमिन् मोमेनीन व अता-कुम
मातू-अदून ग़दन् मोअज्जलू-न व इन्ना इन्शा-अल्लाहु बिकुम
लाहिकू-न0 अल्लाहुम्मगू-फिर-लि अहले बकी-इल्-ग़क़द0

(मुस्लिम)

4. हदीस:- अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि हुजूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मदीना में कब्रों के पास से गुज़र हुआ तो उन की तरफ़ मुतवज्जह होकर, फ़रमाया -

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ أَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِلَاثِرٍ

अस्सलामु अलैकुम या अहलल कुबूरि यगुफिरुल्लाहु

लना व ल-कुम अन्तुम् सलफुना व नहनु बिल्-असरि०

तुम पर सलाम ऐ कब्र वालों अल्लाह तआला हमें और तुम्हें बख़्शे तुम हमारे पेशरौ हो और हम तुम्हारे पीछे आने वाले हैं। (तिर्मिजी)

5. हदीस:- बुरैदा रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों को तालीम फ़रमाया करते थे कि जब कब्रों के पास जायें तो यह कहें-

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ وَإِنَّا

إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ نَسْأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمْ الْعَافِيَةَ (مُسْلِم)

अस्सलामु अलैकुम अहलद-दयारे मिनल-मुमिनी-न

वल-मुस्लिमी-न व इन्ना इन्शा अल्लाहु बिकुम् लाहिकू-न

नस्-अलुल्ला-ह ल-ना व ल-कुमुल्-आफियह० (मुस्लिम)

6. हदीस:- अबू हुरैरह रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब कोई शख्स किसी ऐसे की कब्र पर गुज़रे जिसे वह दुनिया में पहचानता था और उस पर सलाम करे तो वह मुर्दा उसे

पहचानता, और उसके सलाम का जवाब देता है।

(अज खतीब)

7. हदीस:- उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा सिद्दिका रज़ियल्लाहु अन्हा कहती है- मैं हुज़ुरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए अतहर में दाखिल होती तो अपने दिल में यह ख़याल कर लेती कि मेरे यहां शौहर और मेरे वालिद हैं अपने जायद कपड़े अलाहिदा कर देती। लेकिन जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वहां मदफून हुए तो मैं उनसे शर्म की वजह से अपने को कपड़ों में छिपाये रहती।

(अज इमाम अहमद)

8. हदीस:- अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि हुज़ुरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

مَنْ زَارَ قَبْرِي وَجَبَتْ لَهُ شَفَاعَتِي

मन ज़ा-र क़ब्री व ज-ब-त लहू शफ़ाअती जिसने मेरी क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत की, उस के लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई।

(खुलासतुल वफ़ा)

9. हदीस:-

مَنْ جَاءَنِي زَائِرًا لَا تَعْمَدُهُ حَاجَةٌ إِلَّا زِيَارَتِي كَانَ حَقًّا عَلَيَّ أَنْ

أَكُونَ لَهُ شَفِيعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ

मन जा-अ-नी ज़ायरन् ला तअम-दुहु हाज-तुन इल्ला ज़िया-रती का-न हक्कन अलय्य अन् अकू-न लहू शफ़ीअन्

यौमल-किया-मह0

जो मेरी ज़ियारत के लिए आया और बजुज मेरी ज़ियारत के और किसी हाजत का उसने क़स्द न किया। मुझ पर हक़ है कि मैं रोज़े क़ियामत उसका शफ़ी बनूँ। (खुलासतुल वफ़ा)

10. हदीस:-

مَنْ حَجَّ فَرَأَى قَبْرِي بَعْدَ وَقَاتِي كَانَ كَمَنْ زَارَنِي فِي حَيَاتِي

मन् हज्-ज फ़ज़ा-र क़बरी बअ-द वफ़ाती का-न
कमन् ज़ा-र-नी फ़ी हयाती0

जिसने हज करके मेरी वफ़ात के बाद मेरी क़ब्र की ज़ियारत की। वह ऐसा ही है जैसा वह कि जिसने मेरी हयात में ज़ियारत की।

11. हदीस:- مَنْ حَجَّ الْبَيْتَ وَلَمْ يَزُرْنِي فَقَدْ جَفَانِي

मन् हज्-जल् बै-त व लम् य.जुरनी फ़क़द जफ़ानी0
जिसने काबा का हज किया और मेरी ज़ियारत को हाज़िर न हुआ उसने मुझ पर जुल्म किया।

(खुलासतुल वफ़ा)

12. हदीस:- مَنْ زَارَنِي مُتَعَمِّدًا كَانَ فِيَّ جَوَارِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ

मन् ज़ा-र-नी मु-त-अम्मिदन् का-न फ़ी जवारी यौमल्
किया-मति:0

जिसने क़स्द करके मेरी ज़ियारत की वह रोज़े क़ियामत मेरी हिफ़ाज़त में होगा। (बैहकी)

हजरत इमाम शाफई रजियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं-

إِنِّي لَأَتَبَرُّكَ بِأَبِي حَنِيفَةَ وَأَجِيءُ إِلَى قَبْرِهِ فَإِذَا عَرَضَتْ لِي حَاجَةٌ

صَلَّيْتُ رَكَعَتَيْنِ وَسَأَلْتُ اللَّهَ تَعَالَى عِنْدَ قَبْرِهِ فَتَقْضَى سَرِيعًا

इन्नी लाअ-तबर-कु बि-अबी हनी-फ-तः व अजीयु

इला कबरिही फइजा अ-र-जत् ली हा-ज-तुन् सल्लैतु

रकअतैन व स-अल्लुल्ला-ह तआला इन्द कबरिही फतुकजा

सरीअन०

यानी मैं जब हजरत इमाम अबू हनीफा रजियल्लाहु तआला अन्हु की कब्रे मुबारक पर हाजिर होता हूँ। और जब कोई हाजत पेश आती है तो दो रकअतें पढ़कर हजरत इमाम की कब्र के पास दुआ करता हूँ तो मुराद जल्द हासिल हो जाती है। (रहुलमुहतार)

मसला:- जियारत कुबूर मसनून व मुस्तहब है। हुजुरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम शोहदाए उहद की जियारत को तशरीफ ले जाते, और उनके के लिए दुआ फरमाते।

मसला:- जियारत करने वाला अगर कब्र के पास बैठना चाहे तो इतने फासले से बैठे कि अगर साहबे कब्र सामने होते, तो यह उनके पास नजदीक या दूर किस तरह बैठता। इसी अबद व मर्तबा के मुवाफिक अमल करे।

मसला:- जियारत कुबूर का बेहतरीन तरीका यह है कि पहले अपने मकान में दो रकअत नमाजे नफिल पढ़े, हर रकअत में बाद सूरह फातिहा आयतलकुर्सी एक बार और सूरह इखलास यानी कुल हुवल्लाह तीन बार पढ़े। और उस नमाज का सवाब साहबे कब्र को पहुंचाये, अल्लाह तआला

साहबे कब्र की कब्र में नूर पैदा करेगा। और उसको सवाबे अजीम अता फरमाएगा। अब कब्र पर जाकर हाजिर हो। लेकिन रास्ते में फुजूल बातों में मशगूल न हो। जब वहां पहुंचे तो जूते उतार दे और कब्र के पाये से दाखिल होकर सामने इस तरह खड़ा हो कि कबिला को पीठ हो। और साहबे कब्र के चेहरे की तरफ मुंह, और उसके बाद कहे-

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ دَارِ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ أَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَإِنَّا إِن
شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ نَسْأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمْ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ



अस्सलामु अलैकुम अह-ल दारि कौमिन्-मोमिन-न अन्तुम
ल-ना स-ल-फुन व इन्ना इन्शा अल्लाहु बिकुम् लाहिकू-न
नस्-अ-लुल्ला-ह ल-ना व ल-कुमुल्-अफू-व
वल्-आफि-य-त:0

सलाम हो तुम पर ऐ कौमे मोमिनीन के घर वालो तुम हमारे अगले हो और हम इन्शाअल्लाह तुम से मिलने वाले है। अल्लाह से हम अपने और तुम्हारे लिए अफू-व व आफियत का सवाल करते है। या यह कहे-

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ أَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ
وَنَحْنُ بِآلَائِهِ

अस्सलामु अलैकुम या अहलल् कुबूरि यगुफिरुल्लाहु ल-ना
व ल-कुम अन्तुम ल-ना स-ल-फुना व नहनु बिल-असरि0

तुम पर सलाम हो ऐ क़ब्र वालो। अल्लाह हमको और तुमको बख़्शे, तुम हमारे अगले हो और हम पीछे है, फिर सूरह फ़ातिहा "अलिफ़ लाम-मीम्" से "मुफ़लिहून" तक, आयतलकुसी "आ-म-नर्सूल" से आखिर तक, सूरह 'यासीन', सूरह 'मुल्क' सूरह 'ज़िलज़ाल', सूरह 'तकासुर' सूरह 'इख़लास' बारह या ग्यारह या सात या तीन बार पढ़े और उन सब का सवाब साहबे क़ब्र को पहुंचाये। अगर ज़ायर को इतनी देर तक ठहर कर, मज़कूरह वाला आयतों और सूरतों के पढ़ने की मुहलत नहीं है। तो सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा यानी अल्हम्दु लिल्लाह एक बार और सूरह इख़लास यानी कुल हुवल्लाह तीन बार पढ़ने पर इक्तेफ़ा करे।

मसला:- ज़ियारते कुबूर के लिए चार दिन बेहतर है। शम्बा, दो शम्बा, पंज शम्बा, जुमा। हर हफ़्ता में जुमा के दिन बाद नमाज़े जुमा जाना सबसे अफ़ज़ल है। सनीचर के दिन में सूरज निकलने से पहले, और जुमेरात को दिन के अव्वल वक़्त में और बाज़ उलमा के नज़दीक पिछले वक़्त में भी जाना अफ़ज़ल है। रोज़े ईद, शबे बरात, शबे क़द्र, में जाना नीज़ मुस्तहब व बाइसे फ़ज़ीलत है।

मसला:- औलियाए किराम व बुज़ुग़ानि दोन व शोहदा व सुलहा के मज़ारों की ज़ियारत और उनके उसों की शिर्कत के लिए सफ़र करके जाना जायज़ व मुस्तहब है। उनकी बरकत से अल्लाह तआला हाजतें पूरी करता है। ज़ायरीन को बरकात हासिल होती है।

मसला:- औरतों को मज़ारते औलियाए किराम व मकाबिरे

अवाम दोनों पर जाने की मुमानिअत है।

मसला:- बच्चा पैदा होते ही नहला-धुला कर मजाराते औलियाए किराम पर ले जाना वाइसे बरकत है।

मसला:- औलियाए किराम व बुजुगानि दीन व सालेहीन के मजारात पर गिलाफ़ डालना जायज़ है, हां अवाम की कब्रों पर न चाहिए।

मसला:- कब्र पर फूल रखना बेहतर व मुस्तहब है कि फूल जब तक तर रहते हैं, अल्लाह तआला की तस्बीह करते हैं और साहबे कब्र को उन्स होता है।

मसला:- तर घास मकाबिर से न उखेड़ें कि उसकी तस्बीह से रहमत उतरती है और मय्यत का दिल बहलता है।

मसला:- औलियाए किराम के मजाराते तय्यबा के पास उनकी रूहे मुबारक की ताजीम के लिए चिराग़ जलाना मुस्तहसन है।

मसला:- चिराग़ और ऊद बत्ती वगैरह कोई चीज़ नफ़से कब्र पर रखकर जलाना मना है।

मसला:- जायरीन के लिए या फ़ातिहा ख़्वानी के वक़्त ऊद व लोबान सुलगाना बेहतर है।

मसला:- बोसए कब्र में उलमा को इख़्तोलाफ़ है और अहवत मना है।

मसला:- कब्र पर चलना, खड़ा होना, पांव रखना, बैठना, लेटना, पेशाब करना, हराम व नाजाइज़ है।

मसला:- कब्रस्तान में जो नया रास्ता निकला हो उसमें चलना हराम है।

मसला: क़ुरआन में जूता पहन कर चलना मना है।
 जज़र अक़राय मसल लाहु तअला अलहि वसल्लम के सामने
 एक लायल क़ुरस्तान में जूता पहने निकले। फ़र्माय ऐ जूते
 वाला ज़म ज़ते फेर, न त सहब क़द्र को मला न वह तुझे
 सताये।

मसला: जिस के रिश्तेदार की क़द्र के इर्द-गिर्द और
 पुरा तमांगों की क़द्रें हा गयीं कि उनकी क़द्रों पर णव रखे
 और अगर रिश्तेदार की क़द्र तक नहीं जा सकता। तो वहां
 तक जा की उज्जत नहीं, बुर ही स फ़तिहा पढ़े।

मसला: मसल क़द्र को मज्ज करना हगम और क़द्र
 का तवाफ़ ममनूर है।

मसला: क़द्र पर न क़द्र का सामने लेकर नमाज पढ़ना
 मसल तहरीमो है।

मसला: अंतिलियाए किगप न बुनुगानि दीन, मशायख़ व
 उज्जत की कुबूर पर कुब्जा बनाना अमरे जायज़ है।

मसला: नचन गाना, बाजा बजाना, यह सब काम
 हगम है, मज्जगी तय्यदा के पास निहायत मजमूम व क़बीह
 है।

मसला: क़द्र पर क़ुरआन मजीद पढ़ने के लिए हाफ़िज़
 मुक़र्र करना जायज़ है।

मसला: उज्जत पर क़ुरआन मजीद पढ़ना या पढ़वाना
 हगम व नजायज़ है अगर उज्जत पर पढ़वाना चाहे तो
 उसका नदेका यह है कि हाफ़िज़ को उतने दिनों के लिए
 मुअय्यत दामों पर काम काज के लिए नौकर रख ले फिर

उसमें बहने एक ऊँचा यह करा कि इनकी दर कब्र पर पढ़ आना दगा, यह जायज है।

मसला: इत्र में मय्यत के मुँह के सामने क़िबला की जानिक तक ग़ुँद कर इनमें शज्जा व अज़द नामा रखना जायज है।

मसला:- मय्यत के कफ़न पर अज़द नामा लिखना और उसके सीने व पेशानी पर नहम्यने के बाद कफ़न पहनाने में पहना इत्तमा की उंगली से

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखना जायज है, कि हमारे मय्यत की उम्मीद है।

हिकयत:- एक बुजुर्ग ने अपने सीने व पेशानी पर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लिखने की दवायश की थी। इन्क़ाब के बाद लिख दी गई। फिर किसी ने उन्हें ख़दान में देखा तो हाल पूछा। कहा जब मैं कब्र में रखा गया, अज़ाब के फरिश्ते आये, उन्होंने जब पेशानी पर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम देखी कहा तू अज़ाब से बच गया। तम्बीह:- पेशानी पर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ يَا قُلَانُ بْنُ قُلَانٍ हाइला-ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम लिखना भी मुनामिब है, कलमे की उंगली से लिखे, रोशनाई से न लिखे।

मसला: दफ़न के बाद मय्यत को तलकीन करना मशरूअ

है हुजुरे अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं, जब तुम्हारा कोई मुसलमान भाई मरे और उसकी मिट्टी दे चुको, तो तुम में एक शख्स कब्र के सिराहने खड़ा होकर कहे- या फुलों बिन फुलाना वह सुनेगा और जवाब न देगा, फिर कहे- या फुलानुब्नु फुलां वह सीधा होकर बैठ जाएगा, फिर कहे या फुलानुब्नु फुलां वह कहेगा हमें इरशाद कर, अल्लाह तुझ पर रहम फरमाये। मगर तुम्हें उसके कहने की खबर नहीं होती, फिर कहे-

أَذْكُرُ مَا خَرَجْتُ مِنَ الدُّنْيَا شَهَادَةً أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا

عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَنْتَ رَضِيتَ بِاللَّهِ

رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا وَنَا

إِلَّا... KALAM?

لَقُرْآنِ إِمَامًا

उज़कुर मा खरज्-त मिनद्-दुनिया शहा-द-त अन्-ला

इला ह इल्लल्लाहु व अन्-न मुहम्मदन् अब्दुह व रसूलुह

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व इन-न-क रज़ी-त

बिल्लाहि रब्बव व बिल इस्लामि दीनव व बिमुहम्मदिन्

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नबीयव व बिल-कुरआनि

इमाम० तू उसे याद कर जिस पर तू इस दुनिया से निकला,

यानी यह गवाही कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और रसूल

है। और यह कि तू अल्लाह के रब और इस्लाम के दीन और

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी और कुरआन के

इमाम होने पर राजी था, नकीरैन् एक दूसरे का हाथ पकड़

कर कहेंगे चलो हम इसके पास क्या बैठें, जिसे लोग उसकी हुज्जत सिखा चुके। इस पर किसी ने हुजूर से अर्ज की अगर उसकी माँ का नाम मालूम न हो फरमाया हव्वा की तरफ निस्बत करे, बाज् अइम्मए दीन फरमाते हैं, जब कब्र पर मिट्टी बराबर कर चुके और लोग वापस जायें तो मुस्तहब है कि मय्यत से उसकी कब्र के पास खड़े होकर यह कहा जाये-

قُلْ رَبِّيَ اللَّهُ وَدِينِيَ الْإِسْلَامُ وَنَبِيَّ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

कुल रब्बियल्लाहु व दीनीयल इस्लामु व नबीय्यी मुहम्मदुन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तू कह मेरा रब अल्लाह है और मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है।

मसला:- बाद दफन मय्यत कब्र पर अजान देना जायज व मुस्तहब है।

मसला:- किसी जगह या किसी दरख्त की यह समझ कर जियारत करना और वहां फूल डालना, चिरागां करना कि फुलां बुजुर्ग का चिल्ला है यानी यहां वह आया करते हैं यह जिहालत है।

मसला:- अगर किसी जगह किसी बुजुर्ग ने इबादत की हो तो वहां यह समझ कर इबादत करना कि यह जगह मुतबरक है जायज बल्कि मुस्तहब है।

मसला:- औलिया व मशायखे इजाम व बुजुगानि दीन के कुबूर पर, हर साल तारीखे वफात पर बगर्जे जियारत जमा होना और उन्हें कुरआन ख्वानी, कलमा तय्यबा, दुरूद शरीफ

व सदकात का सवाब पहुंचाना, उनकी तरफ से फुकरा व मसाकीन को खैरात करना, खाना खिलाना, मीलाद शरीफ पढ़ना, व अज कहना मौजिबे बरकात व सवाब है, उनके विसाल के दिन का नाम उर्स है। जो हदीस नम क-नव-मतिल उरूस से मुस्तफाद है। और उर्स की असल हदीस शरीफ से साबित है। कि हुजुरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर साल शोहदाए उहद के कुबूर पर बगर्जे जियारत तशरीफ फरमा होते थे। और आपके बाद खुलफ़ाए अरबआ सैयदिना अबूबकर सिद्दीक़ व सैयदिना उमर फारूक़ व सैयदिना उसमान गनी व सैयदिना अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का भी यही अमल रहा। मशायख़े इज़ाम के अक़वाल से साबित है कि बुजुर्गों के उर्स के दिन जायरीन को जो फ़यूज़ व बरकात हासिल होते हैं वह व-निस्वत दूसरे अय्याम के बहुत कुछ जायद होते हैं।

मसला:- किसी के ईसाले सवाब के लिए जानवर पालना, और उसे फरबा करना फिर तारीख़े फ़ातिहा पर उसको बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक़बर कह कर ज़बह करना जायज़ है।

मसला:- हज़राते खुलफ़ाए राशिदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की तारीख़हाए वफ़ात में उनके फ़जायल व कमालात से अहले इस्लाम को आगाह करना जायज़ और बाइसे खैर व बरकत है।

मसला:- अशरए मुहर्रम में पानी, शर्बत, चाय को सबील लगाना, शीर ब्रिंज, रोटी, खिचड़ा पकवा कर तकसीम करना,

शहादत की मजलिस मुनअकिद करना और सही वाकिआते करबला बयान करना जायज है।

मसला:- रबीउल-आखिर की ग्यारहवीं को हुजूर पुरनूर सैयदिना गौसे आजम रजियल्लाहु तआला अन्हु की फातिहा और रजब की छठी को हुजूर ख्वाजा गरीब नवाज रजियल्लाहु तआला अन्हु की फातिहा देना या दिलाना जायज है।

मसला:- हजराते असहाबे कहफ़ का तोशा, हुजूर गौसे आजम रजियल्लाहु अन्हु का तोशा, हजरत शैख अब्दुल हक कुद्देस सिरहुल अजीज का तोशा जायज है।

मसला:- रजब की बाईसवीं को हजरत सैयदिना इमाम जाफ़र सादिक रजियल्लाहु तआला अन्हु को ईसाले सवाब करने के लिए पूरियों के कूंडे भरना और फातिहा दिला कर लोगों को खिलाना जायज है।

मसला:- ईद में सेवईयां और शबे बरात में हलवा पकाना और उस पर फातिहा दिलाना जायज है कि यह उमूर मजकूरा ईसाले सवाब में दाखिल है।

मसला:- मय्यत पर अगर क़ज़ाए रमज़ान है और मरने से पहले उसने वसीयत भी की थी तो उसके माल की तिहाई से हर रोज़ा के एवज़ निस्फ़ साअ गेहूँ या एक साअ जौ मिस्कीन को देना वारिस पर वाजिब है, यही हुक्म नमाज़ का है कि हर फ़र्ज़ व वित्रा के बदले निस्फ़ साअ गेहूँ या एक साअ जौ सदका करे।

मसला:- मय्यत ने अगर माल छोड़ा लेकिन मरने से पहले वसीयत नहीं की या माल ही नहीं छोड़ा और वली

रोज़ा वगैरह का फ़िदया अज़ राहे तबरो देना चाहता है तो जायज़ व मूजिबे सवाब है।

मसला:- मय्यत की नमाज़ों के फ़िदया में क़ुरआन मजीद देना और समझना कि सब नमाज़ों का फ़िदया अदा हो गया, ग़लत है।

मसला:- वली बजाए फ़िदया देने अगर मय्यत की तरफ़ से रोज़ा रखे या नमाज़ पढ़े तो यह ना-काफ़ी है।

मसला:- मुर्दा काफ़िर के लिए मग़फ़िरत की दुआ करना, मुर्दा मुशरिक को बैकुन्ठ वाशी कहना- मुर्दा मुरतद को मरहूम या मग़फ़ूर कहना हराम व कुफ़्र है।

मसला:- काफ़िर की क़ब्र पर दफ़न व ज़ियारत के लिए खड़ा होना ममनूअ व हराम है।

وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَمُ وَعِلْمُهُ جَلٌّ مَحَبَّةً اَتَمَّ وَاَحْكَمَ وَصَلَّى اللّٰهُ
تَعَالٰی عَلٰی خَيْرِ خَلْقِهِ سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَاٰلِهِ وَاَصْحَابِهِ
اَجْمَعِيْنَ ه

वल्लाहु तआला आलमु व इल्मुहु जल्ल मजदहू अतम्म व
अहकम् व सल्लल्लाहु तआला अला खैरि खल्किही सैयदिना
व मौलाना मुहम्मदिंव व आलिही व असहाबिही अजमईन०

नाचीज़

मुहम्मद अब्दुल अजीज़ खां फ़तहपुरी